# यहोशू की पुस्तक

अध्याय 2

## जयवंत विजय

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

## थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

# विषय-वस्तु


परिचय....1

विजय के लिए तैयारियाँ....2

**संरचना और विषय-वस्तु....2**

परमेश्वर की आज्ञाएँ....2

यहोशू की आज्ञाएँ....2

इस्राएल की आज्ञाकारिता....2

**मूल अर्थ....2**

ईश्वरीय अधिकार....3

परमेश्वर की वाचा....3

मूसा की व्यवस्था का स्तर....3

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....4

सारा इस्राएल....4

दो नगरों पर विजय....5

**संरचना और विषय-वस्तु....5**

यरीहो नगर....5

ऐ नगर....7

वाचा का नवीनीकरण....8

**मूल अर्थ....8**

ईश्वरीय अधिकार....8

परमेश्वर की वाचा....9

मूसा की व्यवस्था का स्तर....9

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....10

सारा इस्राएल....11

दो गठजोड़ों पर विजय....11

**संरचना और विषय-वस्तु....12**

गठजोड़ों का संक्षिप्त विवरण....12

विजयों का संक्षिप्त विवरण....12

दक्षिणी गठजोड़ पर विजय....12

उत्तरी गठजोड़ पर विजय....12

**मूल अर्थ....13**

ईश्वरीय अधिकार....13

मूसा की व्यवस्था का स्तर....13

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....14

सारा इस्राएल....15

मसीही अनुप्रयोग....15

**उद्घाटन....16**

**निरंतरता....17**

**पूर्णता....18**

उपसंहार...................................................................................... 19



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# परिचय

यदि पुराने नियम कोई एक भाग है जो अधिकांश आधुनिक मसीहियों को सबसे अधिक असमंजस में डालता है, तो वह अवश्य ही यहोशू की पुस्तक के वे अध्याय होंगे जो प्रतिज्ञा के देश पर इस्राएल की विजय का वर्णन करते हैं। हम हैरान हो जाते हैं कि कैसे प्रेमपूर्ण, दयालु परमेश्वर जिसे हम मसीह में जानते हैं, ने कनान के निवासियों को नाश करने के इस्राएल के प्रयास को सहा होगा। परंतु हमारी आधुनिक समझ के विपरीत, यहोशू की पुस्तक वास्तव में परमेश्वर को सम्मान देती है, उन्हें सहने के लिए नहीं बल्कि इस्राएल की विजय की आज्ञा देने, उसकी अगुवाई करने और उसे सामर्थी बनाने के लिए। और मसीह के अनुयायियों के रूप में हमें इस दृष्टिकोण को अपनाने के लिए बुलाया गया है।

यह *यहोशू की पुस्तक* पर आधारित हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है। और हमने इसका शीर्षक इस्राएल की "जयवंत विजय" दिया है। इस अध्याय में हम इस पुस्तक के पहले मुख्य विभाजन यहोशू 1-12 का अध्ययन करेंगे।

अपने पिछले अध्याय में हमने यहोशू की पुस्तक के मूल अर्थ को इस रीति से सारगर्भित किया था :

> यहोशू की पुस्तक यहोशू के समय में इस्राएल की जयवंत विजय, गोत्रों को उनका उत्तराधिकार देने और वाचाई विश्वासयोग्यता के विषय में लिखी गई थी ताकि बाद की पीढ़ियों के सामने आने वाली ऐसी ही चुनौतियों को संबोधित किया जा सके।

जैसा कि हमने सीखा है, यहोशू की पुस्तक मूल रूप से उन इस्राएलियों के लिए लिखी गई थी जो या तो न्यायियों के समय में, या राजतंत्र के समय में, या फिर बेबीलोनी निर्वासन के दौरान रहते थे। परंतु इस पुस्तक की रचना पुराने नियम के इस्राएलियों के लिए की गई थी जब उन्होंने अपनी जयवंत विजय, गोत्रों के अपने उत्तराधिकारों को प्राप्त करने और अपनी वाचाई विश्वासयोग्यता का नवीनीकरण करने की चुनौतियों का सामना करना जारी रखा।

अध्याय 1-12 का पहला मुख्य विभाजन मूल पाठकों की युद्धों के साथ जुड़ी चुनौतियों को संबोधित करता है। यह कनान देश पर इस्राएल की व्यापक जयवंत विजय की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा ऐसा करता है। ये अध्याय तीन मुख्य खंडों में विभाजित होते हैं : अध्याय 1 में विजय के लिए इस्राएल की तैयारियाँ; अध्याय 2-8 में दो नगरों पर इस्राएल की आरंभिक विजय; और अध्याय 9-12 में तो गठजोड़ों पर इस्राएल की बाद की विजय।

इस्राएल की जयवंत विजय पर आधारित हमारा यह अध्याय इन तीनों खंडों पर ध्यान देगा। फिर हम मसीही अनुप्रयोग पर कुछ टिप्पणियाँ करने के साथ इसे समाप्त करेंगे। आइए पहले हम विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों को देखें।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# विजय के लिए तैयारियाँ

हमारे पास केवल इतना ही समय होगा कि हम विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों के दो पहलुओं को संक्षिप्त रूप में देखें : पहला, हमारी पुस्तक के इस भाग की संरचना और विषय-वस्तु, और फिर इसके मूल अर्थ के कुछ पहलू। आइए हम इसकी संरचना और विषय-वस्तु के संक्षिप्त विवरण के साथ आरंभ करें।

## संरचना और विषय-वस्तु

यहोशू की पुस्तक वहाँ से आरंभ होती है जब इस्राएल यरदन नदी के पूर्व में मोआब के मैदानों में था, वह क्षेत्र जिसे अक्सर "यरदन पार" कहा जाता है। गिनती 32 के अनुसार ये क्षेत्र इतने उपजाऊ थे कि रुबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्र ने वहीं बसने के लिए मूसा से अनुमति मांगी और उन्हें अनुमति मिल भी गई। परंतु हमारी पुस्तक के आरंभ में परमेश्वर ने यहोशू को आज्ञा दी कि वह कनान देश पर विजय पाने हेतु पश्चिम की ओर इस्राएल की अगुवाई करने के लिए तैयारी करे। इस क्षेत्र को कई बार "यरदन के साथ का क्षेत्र" कहा जाता है।

विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों पर आधारित यह खंड ऐसे तीन भागों में विभाजित होता है जो हमारी पुस्तक के आने वाले प्रत्येक युद्ध के लिए दी गई आज्ञा की उचित कड़ी का परिचय देते हैं।

### परमेश्वर की आज्ञाएँ

हम सबसे पहले यहोशू के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को 1:1-9 में पढ़ते हैं। पद 2 में परमेश्वर ने यहोशू से यह कहा, "अब तू उठ, कमर बाँध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार... को जा।" फिर उसने पद 6, 7 और 9 में यहोशू से कहा, "हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा।"

### यहोशू की आज्ञाएँ

आगे, हमारे लेखक ने परमेश्वर के निर्देशों के प्रत्युत्तर के रूप में यहोशू की आज्ञाओं का परिचय भी दिया। पद 1:10-15 में यहोशू ने इस्राएल को तैयार रहने की आज्ञा दी। पद 11 में उसने अपने सरदारों को इस्राएल से यह कहने को कहा, "अपने अपने लिये भोजन तैयार कर रखो।" और पद 14 में उसने यरदन पार के गोत्रों को विशेष रूप से यह आज्ञा दी, "तुम जो शूरवीर हो... पार उतर चलो।"

### इस्राएल की आज्ञाकारिता

अंत में, हमारे लेखक ने 1:16-18 में यहोशू के प्रति इस्राएल की आज्ञाकारिता का वर्णन किया। पद 16 में गोत्रों ने सर्वसम्मति से स्वयं को इस विश्वासयोग्य सेवा के लिए समर्पित किया, और यहोशू से यह कहा, "जहाँ कहीं तू हमें भेजे वहाँ हम जाएँगे।"

विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों की इस त्रि-रूपी संरचना और विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए हमें इसके मूल अर्थ पर टिप्पणी करनी चाहिए। हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक को इस रीति से आरंभ क्यों किया?

## मूल अर्थ

यह देखना कठिन नहीं है कि यहोशू की पुस्तक कनान पर विजय पाने के लिए इस्राएल की तैयारियों के एक बहुत ही सकारात्मक चित्रण के साथ आरंभ होती है। परमेश्वर की आज्ञा सीधी और आश्वस्त करनेवाली थी। यहोशू ने सब गोत्रों को अनुपालन करने के लिए कहा। और युद्ध में आगे बढ़ने की



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

बुलाहट के विषय में किसी एक भी इस्राएली की ओर से हिचकिचाहट का कोई संकेत नहीं है। स्पष्ट रूप से, जब यहोशू के मूल पाठकों ने अपने विरुद्ध खड़े कई शत्रुओं का सामना किया तो उन्हें इस आदर्श विवरण का अनुसरण करना था कि कैसे यहोशू और इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा के प्रति उत्तर दिया।

## ईश्वरीय अधिकार

जब हम इस अध्याय को और अधिक गहराई से देखते हैं, तो हम पाते हैं कि हमारे लेखक के सकारात्मक चित्रण ने ऐसे पांच विषयों को दर्शाया है जो पूरी पुस्तक में बार-बार पाए जाते हैं। पहला, अध्याय 1 में विजय के लिए तैयारियों के अपने विवरण में उसने इस्राएल की तैयारियों के पीछे ईश्वरीय अधिकार पर बल दिया। परमेश्वर की आज्ञाओं के आरंभिक दृश्य इन शब्दों के साथ पद 1 में आरंभ होते हैं, “यहोवा ने... यहोशू से... कहा।” इस वाक्यांश ने स्थापित किया कि यहोशू की आज्ञाओं के पीछे परमेश्वर का अधिकार था। इसी रीति से, स्वयं परमेश्वर ने मूसा के उत्तराधिकारी के रूप में यहोशू को नियुक्त किया जब उसने पद 5 में यह कहा, “जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा।” हम इसी विषय को इस्राएल की आज्ञाकारिता में स्पष्ट रूप में देखते हैं जब इस्राएल के लोगों ने पद 17 में प्रत्युत्तर दिया, “जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे।” मूल पाठकों को विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों को हृदय में बसाना था क्योंकि परमेश्वर और मूसा के ईश्वरीय रूप से अधिष्ठापित उत्तराधिकारी, यहोशू ने इन घटनाओं को निर्देशित किया था।

## परमेश्वर की वाचा

दूसरा, विजय के लिए यहोशू की तैयारी ने परमेश्वर की वाचा के महत्व को भी प्रकट किया। परमेश्वर की आज्ञाओं के आरंभिक दृश्य में परमेश्वर ने पद 6 में यहोशू से कहा, “जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा।” यह अनुच्छेद दो रूपों में इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत करता है। पहला, इस्राएल को कनान देश को केवल प्राप्त नहीं करना था, उन्हें उसे “उत्तराधिकार” में लेना था — जो इब्रानी क्रिया *नाखाल* (נָחַל) से आया है। कनान देश का वर्णन व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में इस्राएल के चिरस्थाई “उत्तराधिकार” के रूप में लगभग तीस बार, और यहोशू की पुस्तक में चालीस बार से अधिक बार किया गया है। और दूसरा, इसी पद में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने इस देश के देने की “शपथ... इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी।” यह उत्पत्ति 15 का उल्लेख करता है जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम — या उस समय के “अब्राम” — से वाचा बाँधी कि वह उसके वंशजों को कनान देश देगा। इस्राएल के पूर्वजों के साथ परमेश्वर की वाचा ने स्थापित किया कि ईश्वरीय वाचा के द्वारा कनान न केवल यहोशू के समय के इस्राएल का था, बल्कि हमारी पुस्तक के मूल इस्राएली पाठकों का भी। और इसी कारण, वे अपने समय में सामर्थ्य और साहस के साथ आगे बढ़ सके, जिस प्रकार परमेश्वर ने यहोशू को आज्ञा दी थी।

## मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, लेखक ने यह स्पष्ट किया कि मूसा की व्यवस्था के स्तर का पालन करना युद्ध में विजय प्राप्त करने और प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार करने हेतु इस्राएल की हर पीढ़ी के लिए आवश्यक था। पद 7 में परमेश्वर ने यहोशू को आज्ञा दी : “तू... दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना... तब... तेरा काम सफल होगा।” जैसे कि यहोशू की विजय की कहानी बार-बार यह दर्शाती है, हमारी पुस्तक के मूल पाठकों को उन संघर्षों के विषय में महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों को समझना था जिनका उन्होंने सामना किया था : मूसा की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता उनकी विजय की ओर अगुवाई करेगी; अनाज्ञाकारिता उन्हें पराजय की ओर ले जाएगी।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

## परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, विजय के लिए यहोशू की तैयारियाँ दर्शाती हैं कि परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य ने कनान पर विजय को संभव बनाया। परमेश्वर की आज्ञाओं का आरंभिक दृश्य इस दृष्टिकोण को दर्शाता है जब परमेश्वर ने पद 5 में यहोशू से यह कहा : "मैं... तेरे संग भी रहूँगा।" और यह विषय पद 9 में दर्शाया गया है जहाँ परमेश्वर ने यहोशू से यह कहा, "जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्‍वर यहोवा तेरे संग रहेगा।" जैसे कि 2 इतिहास 20:17 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं, युद्ध के संदर्भ में परमेश्वर के अपने लोगों के "साथ" होने की बात करने का अर्थ था कि परमेश्वर अलौकिक सामर्थ्य के साथ उनके *साथ-साथ* और उनके *लिए* लड़ेगा। और इसी रीति से, यहोशू 1:17 में इस्राएल की आज्ञाकारिता के दृश्य में इस्राएल के गोत्रों ने बड़े जोश के साथ यहोशू को उत्तर दिया, "तेरा परमेश्‍वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसा ही तेरे संग भी रहे।" वास्तव में, इस्राएल की विजय अब मानवीय कार्य नहीं था। इस्राएल की किसी भी पीढ़ी को अपनी सामर्थ्य में युद्ध में नहीं उतरना था। यदि परमेश्वर इस्राएल के साथ और उनके लिए लड़ता है, वे तभी सफल होने की आशा कर सकते थे।

> यहोशू 1:5 में परमेश्वर यहोशू के द्वारा प्रतिज्ञा करता है कि जब वे लोग उस देश पर विजय पाने को जाएँगे तो परमेश्वर इस्राएल के संग रहेगा। और निस्संदेह, स्पष्ट बात यह है कि परमेश्वर की उपस्थिति चाहे किसी भी रूप या तरीके में हो, वह अर्थपूर्ण ही होती है; परमेश्वर को अपने साथ रखना हमेशा बहुत अच्छा होता है। परंतु वहाँ कुछ और भी चल रहा था क्योंकि यह पवित्र युद्ध और ईश्वरीय योद्धा की भाषा-शैली है। मैं पुराने नियम का एक ऐसा विद्वान हूँ जो निर्गमन 3 और निर्गमन 6 को यह शिक्षा देने के रूप में समझता है कि यह "यहोवा" नाम वास्तव में "यहोवा जो सेनाओं का प्रभु है" का संक्षिप्त रूप है। अतः यहोवा नाम, परमेश्वर का पुराने नियम का यह नाम ऐसे परमेश्वर के चरित्र को दर्शाता है जो अपने लोगों के लिए लड़ता है। और इसलिए मेरे विचार से "इम्मानुएल" उस अभिप्राय को लेता है कि परमेश्वर केवल उनकी सहायता करने के लिए या उन्हें उत्साहित करने के लिए ही उपस्थित नहीं है, बल्कि परमेश्वर उनके साथ ऐसे परमेश्वर के रूप में उपस्थित है जो स्वर्ग की सेनाओं की अगुवाई करेगा, ताकि यहोशू और इस्राएल को केवल परमेश्वर की अगुवाई का अनुसरण करना हो, और वह उनके लिए लड़ेगा, जो यहोशू की पूरी पुस्तक में एक महत्वपूर्ण विषय है। अतः सारांश में, यह एक प्रतिज्ञा है, केवल यही नहीं कि परमेश्वर उनके साथ रहेगा, बल्कि परमेश्वर उनके लिए लड़ेगा।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

## सारा इस्राएल

पाँचवां, यहोशू का आरंभिक अध्याय सारे इस्राएल की भागीदारी के महत्व का परिचय देता है। जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, यहोशू की आज्ञाओं ने पद 14 में यह कहते हुए प्रत्यक्ष रूप से यरदन पार के गोत्रों को संबोधित किया, "तुम जो शूरवीर हो... आगे आगे पार उतर चलो।" और विजय में सारे इस्राएल की भागीदारी इस्राएल की आज्ञाकारिता के दृश्य में फिर से प्रकट होती है। पद 18 में इस्राएलियों ने यहोशू को उत्तर दिया, "जो तेरे विरुद्ध बलवा करे, और जितनी आज्ञाएँ तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला जाएगा।" जैसा कि हम देखेंगे, अपनी पूरी पुस्तक में लेखक ने अपने मूल पाठकों के समक्ष यह आदर्श रखा कि यदि वे अपने समय के सब संघर्षों में पूरी सफलता को पाना चाहते हैं तो सारे इस्राएल को एक प्रजा के रूप में खड़ा होना होगा।

विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों के एक आदर्श प्रस्तुतिकरण के साथ यहोशू के समय की जयवंत विजय का परिचय देने के बाद हमारी पुस्तक का लेखक यरीहो और ऐ नामक दो नगरों पर प्राप्त इस्राएल की आरंभिक विजयों की ओर मुड़ा।

# दो नगरों पर विजय

इस बिंदु पर, हमारी पुस्तक कनान पर यहोशू की विजय के पहले चरण का वर्णन करती है। यहोशू ने इस्राएल के बारहों गोत्रों की अगुवाई यरदन के पार की जहाँ उन्होंने गिलगाल में छावनी डाली। गिलगाल से यहोशू ने इस्राएल की अगुवाई यरीहो नगर की ओर की। और यरीहो को पराजित करने के बाद वे ऐ नगर की ओर बढ़े। ऐ नगर पर विजय पाने के बाद इस्राएल के गोत्र प्रतिज्ञा के देश के बिल्कुल केंद्र, अर्थात् गरिज्जीम पर्वत और एबाल पर्वत की ओर बढ़े, जहाँ उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नया बनाने के द्वारा इन आरंभिक सफलताओं का उत्सव मनाया।

हम इन दो नगरों पर इस्राएल की विजयों के इस विवरण को दो चरणों में देखेंगे। पहला, हम इसकी संरचना और विषय-वस्तु की रचना करेंगे और फिर हम इसके मूल अर्थ को सारगर्भित करेंगे। आइए हम  संरचना और विषय-वस्तु के साथ आरंभ करें।

## संरचना और विषय-वस्तु

संपूर्ण रूप में, यरीहो और ऐ नगर के विरुद्ध युद्ध के जाने-पहचाने विवरण अलग-अलग शिक्षा को दर्शाते हैं। और यह शिक्षा हमारे लेखक के लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि इसमें उसने अपनी पुस्तक का एक चौथाई भाग समर्पित किया। जैसा कि हम देखेंगे, यहोशू ने दोनों नगरों पर इस्राएल को विजय दिलाई, परंतु विजय पाने के तरीके बहुत ही अलग-अलग थे। यरीहो के युद्ध का प्रत्येक पहलू आदर्श था और परमेश्वर के द्वारा अद्भुत रूप से आशीषित था। परंतु ऐ नगर पर विजय तभी प्राप्त की गई जब इस्राएल ने परमेश्वर के विरुद्ध गंभीर विश्वासघात से मन फिराया।

### यरीहो नगर

अध्याय 2–8 में इन दोनों नगरों पर इस्राएल की विजयों का वर्णन तीन भागों में विभाजित होता है : अध्याय 2:1–6:27 में यरीहो नगर, अध्याय 7:1–8:29 में ऐ नगर, और अध्याय 8:30-35 में वाचाई नवीनीकरण। आइए पहले यरीहो पर इस्राएल की विजय के विवरण को देखें।

**यहोशू के भेदिए और राहाब —** यरीहो की कहानी में चार मुख्य खंड पाए जाते हैं। यह अध्याय 2:1-24 में यहोशू के भेदियों और राहाब के साथ आरंभ होती है। इस खंड में यहोशू ने नगर का भेद लेने के लिए भेदियों को भेजा। वहाँ उनकी भेंट राहाब से होती है जो इस्राएल के परमेश्वर पर विश्वास कर लेती है, भेदियों की रक्षा करती है और सुरक्षा की एक महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा को प्राप्त करती है। फिर भेदिए बड़े विश्वास के साथ यहोशू के पास लौटते हैं कि परमेश्वर इस्राएल को विजय प्रदान करेगा।

इस शुरुआत के साथ संतुलित करते हुए, चौथा और अंतिम खंड यरीहो की कहानी को समाप्त करता है। अध्याय 6:22-27 में यह विवरण फिर भेदियों और राहाब की ओर लौटता है। इस खंड में यहोशू ने भेदियों से कहा कि वे राहाब की सुरक्षा के लिए दी गई शपथ को पूरा करें, और फिर उसे और उसके परिवार को इस्राएल में शामिल कर लिया गया। राहाब और भेदियों के साथ आरंभ और समाप्त करने के

द्वारा हमारे लेखक ने अध्याय 2-6 में यरीहो के युद्ध के एक भाग के रूप में उन सब बातों को चित्रित किया जो वहाँ घटा था।

अब इब्रानियों 11:31 और याकूब 2:25 हमें याद दिलाते हैं कि हमें राहाब की आज्ञाकारिता में व्यक्त उसके विश्वास की प्रशंसा करनी चाहिए जिसने उसे परमेश्वर के दंड से बचाया। परंतु जब हम इस खंड को इसके बड़े संदर्भ में रखते हैं तो हम देख सकते हैं कि हमारे लेखक ने अपने मूल पाठकों के लिए अन्य विषयों पर भी बल दिया था।

**चमत्कारिक रूप से यरदन नदी को पार करना —** पुस्तक के इन दोनों सिरों के बीच बहुत ही चमत्कारिक घटनाओं के दो खंड पाए जाते हैं। एक ओर, हम अध्याय 3:1–5:12 में इस्राएल द्वारा यरदन नदी को चमत्कारिक रूप से पार करने की घटना को देखते हैं। ये अध्याय पूर्वी किनारे पर इस्राएल की विधिपूर्ण तैयारियों के साथ आरंभ होते हैं, जिनमें वे परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति और परमेश्वर की स्वीकृति को दर्शाते हैं। तब वाचा के संदूक को लेकर जानेवाले याजक जब नदी में उतरे तो यरदन नदी दो भागों में बंट गई। आधे रास्ते में बारह लोगों ने याजकों के आस-पास से बारह पत्थर इकट्ठे किए, और तब लोग वहाँ से निकल गए। जब नदी को पार कर लिया गया तो वे उन पत्थरों को पश्चिमी किनारे पर ले गए जहाँ नदी समाप्त हुई, और उन्हें गिलगाल में स्मृति के रूप में स्थापित किया गया।

इस खंड के विधिपूर्ण आरंभ के संतुलन में हमारे लेखक ने बताया कि कैसे यहोशू ने फिर खतने के द्वारा इस्राएलियों को पवित्र किया। और चार दिनों के बाद इस्राएल ने फसह का पर्व मनाया और पहली बार मन्ना के स्थान पर कनान की उपज को खाया।

**यरीहो का चमत्कारिक पतन —** यह हमें तीसरे खंड की ओर लेकर आता है : अध्याय 5:13–6:21 में यरीहो का चमत्कारिक पतन। इस युद्ध का परिचय देने के लिए हमारे लेखक ने एक रहस्यमय लघुचित्र के साथ आरंभ किया जिसने यहोशू की आगामी असाधारण विजय को स्पष्ट किया। जब यहोशू यरीहो को पहुँचा तो पद 5:13 में उसकी भेंट स्वर्गदूत जैसे एक पुरुष से हुई, और यहोशू ने उससे एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा : "क्या तू हमारी ओर का है, या हमारे बैरियों की ओर का?" पद 14 में उस स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "नहीं; वरन् मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूँ।" जब यहोशू ने अपने आप को दीन किया, तो उस स्वर्गदूत ने यहोशू से अपनी जूती उतारने को कहा क्योंकि वह एक पवित्र स्थान पर खड़ा था। और इस कार्य के साथ उस स्वर्गदूत ने उसे स्वर्ग की सेना की सहायता का आश्वासन दिया।

इस लघुचित्र के बाद परमेश्वर ने यरीहो पर आक्रमण के निर्देश दिए — ऐसा आक्रमण जो पूरी तरह से स्वर्ग की सेना पर निर्भर था। इस्राएलियों को लगातार छः दिनों तक नगर के चारों ओर एक चक्कर लगाना था, जिस दौरान याजकों को सबसे आगे वाचा का संदूक लिए हुए चलना था। सातवें दिन उन्हें नगर के चारों ओर सात बार चक्कर लगाने थे। याजकों को युद्ध के लिए स्वर्गीय सेनाओं का आह्वान करते हुए अपनी तुरहियाँ बजानी थीं। और लोगों को नगर की दीवारों के चमत्कारिक रूप से ढह जाने के बाद ही जोर से पुकारते हुए अंदर जाना था। इस्राएल ने परमेश्वर के सब निर्देशों का पालन किया।

इस कहानी की इस विशेषता का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है जो यहोशू की विजय में बार-बार पाई जाती है। पद 6:17 के अनुसार यहोशू ने आज्ञा दी कि "नगर और जो कुछ उसमें है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगी।" अभिव्यक्ति "अर्पण की वस्तु" का अनुवाद इब्रानी क्रिया *खरम* (חָרַם) से किया गया है। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया था, इसी क्रिया की संज्ञा *खेरेम* (חֵרֶם) के साथ इसमें आराधना के कार्य के भाव हैं। युद्ध के संदर्भ से बाहर, जैसे कि लैव्यव्यवस्था 27:28 जैसे स्थानों में, इसी शब्द का प्रयोग आराधना की सेवाओं के लिए लोगों, पशुओं, या भूमि के स्थाई समर्पण के लिए किया गया है। परंतु युद्ध के संदर्भ में, जैसे कि यहोशू में, यह पशुओं और लोगों को मार डालने और कुछ चुनिंदा कीमती धातुओं आदि को मिलापवाले तंबू में समर्पित करने को दर्शाता है।

यह समझने के लिए कि कैसे ये आराधना के कार्य थे, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि सामान्य रूप में सेनाएँ — इस्राएल की सेनाएँ भी — युद्धों में लूटे गए सामान और दासों से अपने आप को



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

मजबूत बनाती थीं। परंतु व्यवस्थाविवरण 20:16 जैसे अनुच्छेदों में परमेश्वर ने आज्ञा दी कि राहाब को छोड़कर कनान के सब निवासियों को आराधना के एक कार्य के रूप में उसके प्रति चढ़ाया जाना था। ऐसा करने के द्वारा, इस्राएल ने बड़े आभार के साथ यह माना कि यह विजय वास्तव में परमेश्वर की विजय थी।

## ऐ नगर

यरीहो पर विजय के बाद हमारा लेखक अध्याय 7:1–8:29 में ऐ नामक नगर पर इस्राएल की विजय की ओर मुड़ा।

**इस्राएल की पराजय** — ऐ नगर की घटना के खंड का वर्णन तीन चरणों में किया गया है। पहला, अध्याय 7:1-5 में ऐ नगर में इस्राएल की पराजय के संक्षिप्त विवरण को देखते हैं। इस कहानी में भेदियों ने यहोशू को गलत सलाह दी कि ऐ नगर पर विजय पाना आसान होगा। इसलिए उसने अपनी सेना के कुछ ही लोगों को आक्रमण करने के लिए भेजा। हम यह भी देखते हैं कि आकान नामक एक मनुष्य ने यरीहो से लूटे हुए कुछ सामान को परमेश्वर के प्रति समर्पित करने की अपेक्षा चुपचाप अपने पास रख लिया था। अतः परमेश्वर की ओर से आए दंड के कारण लगभग छत्तीस इस्राएली मार डाले गए और बाकियों को खदेड़ दिया गया।

**इस्राएल का पश्चाताप** — अध्याय 7:6-26 में दूसरे चरण में हम इस्राएल के पश्चाताप के बारे में पढ़ते हैं। यहोशू ने परमेश्वर के समक्ष विलाप किया और परमेश्वर ने इस्राएल की पराजय के कारण को प्रकट किया। अध्याय 7:11 के अनुसार आकान का पाप इतना घोर था कि परमेश्वर ने कहा कि "इस्राएलियों ने... जो वाचा मैं ने उनसे अपने साथ बंधाई थी उसको उन्होंने तोड़ दिया है।" परमेश्वर ने आकान को ढूँढने के निर्देश दिए। और जब आकान ने अपने पाप को मान लिया, तो उसे और उसके परिवार को और जो कुछ उसके पास था सबको "विनाश के लिए समर्पित कर दिया गया," जैसे कि परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। कनानियों के भयानक पापों के कारण जिस विनाश की आज्ञा उनके लिए दी गई थी, वही विनाश इस इस्राएली परिवार पर भी आया।

> आकान का पाप बहुत ही विनाशकारी था, और इसका कारण यह था कि क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएल की संतान को यरीहों को पराजित करते समय और उस पर अधिकार करते समय कहा था कि सब कुछ परमेश्वर को समर्पित किया जाए... और इसलिए उसने न केवल वह ले लिया जो उसका नहीं था, बल्कि वह जो परमेश्वर का था, और इस प्रकार उसने वह भयानक कार्य किया। अब यह इतना त्रासदीपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि जो वाचा परमेश्वर बाँधता है वह इस्राएल के साथ व्यक्तिवादी वाचा नहीं होती... हम अपनी विचारधारा में बहुत ही व्यक्तिवादी हैं। हमारे लिए यह समझना कठिन है कि हम सब एक दूसरे के प्रति उत्तरदाई हैं। परंतु जब आकान ने पाप किया तो वह केवल उसका पाप नहीं था, परंतु यह ऐसा पाप था जिसने पूरे राष्ट्र को प्रभावित किया क्योंकि वह विश्वास के उस समुदाय का भाग था। और मेरे विचार में यह केवल पुराने नियम की बात ही नहीं है, बल्कि नए नियम की भी है जब हम समझते हैं कि हम सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और जो एक व्यक्ति करता है वह पूरे समुदाय को प्रभावित करता है। और यही निश्चित रूप से आकान के पाप से संबंध में उसके साथ हुआ।
>
> — डॉ. टी. जे. बेटस



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

**इस्राएल की विजय —** अध्याय 8:1-29 में तीसरा चरण इस्राएल के पश्चाताप के परिणाम को दर्शाता है : ऐ नगर पर इस्राएल की विजय। हम एक चिर-परिचित तरीके को देखते हैं। परमेश्वर ने यहोशू को छिपकर घात लगाने को कहा। यहोशू ने लोगों को वैसे ही करने की आज्ञा दी। लोगों ने आज्ञा मानी। और जब युद्ध आगे बढ़ा, तो परमेश्वर ने अलौकिक हस्तक्षेप के द्वारा इस्राएल को विजय प्रदान की।

### वाचा का नवीनीकरण

यरीहो और ऐ नगरों पर विजय प्राप्त करने के बाद इन दोनों नगरों पर इस्राएल की विजयों का विवरण अध्याय 8:30-35 में वाचा के नवीनीकरण के साथ समाप्त होता है। व्यवस्थाविवरण 11:29 में मूसा की आज्ञा की आज्ञाकारिता में इस्राएल ने एबाल पर्वत और गरिज्जीम पर्वत, अर्थात् प्रतिज्ञा के देश के बिल्कुल केंद्र की ओर यात्रा करने के द्वारा विजय के पहले खंड की पूर्णता का उत्सव मनाया। मूसा की संपूर्ण व्यवस्था को पढ़ा गया, और पूरे राष्ट्र ने परमेश्वर की वाचा का पालन करने के अपने समर्पण को फिर से नया बनाया।

इन दोनों नगरों पर इस्राएल की विजयों की संरचना और विषय-वस्तु को मन में रखते हुए, हम अब इन अध्यायों के मूल अर्थ पर टिप्पणी करने की स्थिति में हैं।

## मूल अर्थ

यद्यपि मूल पाठकों ने यहोशू से भिन्न परिस्थितियों का सामना किया, फिर भी यहोशू की पुस्तक के लेखक ने यरीहो को एक ऐसे आदर्श के रूप में रखा जिसका अनुसरण उन्हें ऐसे रूपों में करना था जो उनके अपने समय में सही हों। उसने ऐ नगर को भी इस विषय में एक ऐसे सबक के रूप में प्रस्तुत किया कि जब वे परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करने के कारण पराजित हो जाएँ तो उन्हें क्या करना है। और वाचा के नवीनीकरण के भव्य उत्सव ने इस बात की पुष्टि की कि युद्ध में परमेश्वर की दया परमेश्वर के प्रति उनके समर्पणों को नया बनाने के द्वारा युद्ध में प्राप्त सफलताओं का उत्सव मनाने के लिए मूल पाठकों को प्रेरित करे।

### ईश्वरीय अधिकार

इन रूपों में अपने पाठकों को प्रभावित करने के लिए हमारे लेखक ने एक बार फिर उन दोनों नगरों पर इस्राएल की विजयों के अपने वर्णन में पाँच मुख्य विषयों को दर्शाया। पहला, उसने इन घटनाओं के पीछे ईश्वरीय अधिकार पर बल दिया। यरदन नदी को पार करने के वर्णन में हम पद 3:7 में इन शब्दों को पढ़ते हैं : "तब यहोवा ने यहोशू से कहा।" पहले की तरह ही इस वाक्यांश ने उन सब बातों पर परमेश्वर के अधिकार को स्थापित किया जिन्हें करने की आज्ञा यहोशू ने अपने लोगों को दी थी। और पद 6:2 में यरीहो के चमत्कारिक पतन में हम फिर इस वाक्यांश को पाते हैं, "यहोवा ने यहोशू से कहा।"

ईश्वरीय अधिकार पर बल देने के लिए हमारे लेखक ने यह भी दर्शाया कि यहोशू मूसा का उत्तराधिकारी था। पद 4:14 में यरदन नदी के चमत्कारिक रूप से पार करने में इस्राएल ने वैसे ही यहोशू का भय माना "जैसे वे मूसा का भय मानते थे।" पद 4:23 में हम पढ़ते हैं कि "[जैसे] परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को... सुखा रखा था, वैसे ही उसने यरदन का भी जल.. सुखा रखा।" और पद 5:15 में यरीहो के चमत्कारिक पतन में स्वर्गदूत ने यहोशू को आज्ञा दी, "अपनी जूती पाँव से उतार डाल, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है" — यह ठीक वैसे ही था जैसे परमेश्वर ने निर्गमन 3:5 में मूसा को आज्ञा दी थी।

अब ऐ नगर के विवरण में इस्राएल शुरू में विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा करने में विफल रहा। परंतु हम पद 7:10 में पढ़ते हैं कि इस्राएल के पश्चाताप के कारण "यहोवा ने यहोशू से कहा।" "यहोवा ने यहोशू से कहा" वाक्यांश पद 8:1, 18 में ऐ नगर पर इस्राएल की विजय में भी पाया जाता है।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

एक बार फिर, हमारे लेखक ने बल दिया कि इन घटनाओं का उद्देश्य अपने पाठकों का मार्गदर्शन करना था क्योंकि उन्हें स्वयं परमेश्वर और मूसा के उत्तराधिकारी यहोशू ने निर्देशित किया था।

## परमेश्वर की वाचा

दूसरा, दोनों नगरों पर इस्राएल की विजयों के विवरण ने इस बात पर भी बल दिया कि परमेश्वर की वाचा ने कनान को इस्राएल के गृहक्षेत्र के रूप में स्थापित किया था। यरदन नदी को पार करने के बाद पद 5:6 के विधिपूर्ण उत्सव ने कनान का वर्णन ऐसे देश के रूप में किया "जो देश मैं ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर तुम्हें देने को कहा था।" और इसी प्रकार, यहोशू के भेदियों की कहानी में पद 2:9 में राहाब ने कहा, "यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है।" पद 2:24 में भेदिए भी बड़े विश्वास के साथ यह कहते हुए यहोशू के पास लौट आए, "निस्संदेह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है।" इसी रीति से पद 6:16 के यरीहो के पतन में यहोशू ने इस्राएल की सेना को आज्ञा दी, "जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है।" परमेश्वर की वाचा से संबंधित इन उल्लेखों की रचना मूल पाठकों को इस बात के प्रति आश्वस्त करने के लिए की गई थी कि उनकी परिस्थितियों के बावजूद भी प्रतिज्ञा के देश पर उनका ईश्वरीय अधिकार है।

## मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, दो नगरों पर इस्राएल की विजयों ने यह भी प्रकट किया कि मूसा की व्यवस्था के स्तर की आज्ञाकारिता इस्राएल के लिए आवश्यक है, यदि वे युद्ध में विजय प्राप्त करना चाहते हैं। पद 4:10 में यरदन नदी को पार करने का विवरण हमें बताता है कि याजकों ने उन बातों के अनुसार इस्राएल की अगुवाई की "जिन्हें यहोवा ने यहोशू को लोगों से कहने की आज्ञा दी थी।" यहोशू 4:12 दर्शाता है कि गोत्रों ने स्वयं को "मूसा के कहने के अनुसार" व्यवस्थित किया। पद 5:2 में यहोशू ने मूसा की व्यवस्था के अनुसार इस्राएलियों का खतना करवाया। पद 5:10 में इस्राएल ने उस दिन फसह मनाया जिस दिन को मूसा ने स्थापित किया था। इसी प्रकार से, पद 6:22 में यहोशू के भेदियों और राहाब के विवरण के अंत में यहोशू ने भेदियों को "अपनी शपथ के अनुसार" राहाब से व्यवहार करने की आज्ञा दी — मूसा की व्यवस्था के द्वारा स्थापित एक स्तर। और पद 6:24 में लेखक ने दर्शाया कि इस्राएल ने "[यरीहो] नगर को और जो कुछ उसमें था, सब को आग लगाकर फूँक दिया," जैसे कि व्यवस्थाविवरण में मूसा ने आज्ञा दी थी।

इसी तरह, मूसा की व्यवस्था की अनाज्ञाकारिता ने ऐ नगर पर मिली पराजय को स्पष्ट किया। पद 7:1 में हम देखते हैं कि मूसा की व्यवस्था का सीधा-सीधा उल्लंघन करते हुए "इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्वासघात किया।" और पद 7:15 में यहोशू ने इस बात पर बल देते हुए इस्राएल को पश्चाताप करने के लिए प्रेरित किया कि आकान ने "यहोवा की वाचा को तोड़ा है।" पद 7:13 में स्वयं परमेश्वर ने इस अनाज्ञाकारिता के परिणाम की घोषणा की जब उसने कहा कि इस्राएल तब तक अपने शत्रुओं के सामने स्थिर नहीं रह सकता जब तक आकान का पाप दूर नहीं किया जाता। यह बिंदु इतना महत्वपूर्ण है कि लेखक पद 22:20 में फिर इसकी ओर लौटा। उसने स्पष्ट किया किया कि परमेश्वर का क्रोध पूरे इस्राएल राष्ट्र पर भड़का क्योंकि "आकान ने अर्पण की हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात किया।" निस्संदेह, जैसे ही इस्राएल ने आकान के विश्वासघात को दूर किया, तो पराजय विजय में बदल गई।

इस्राएल की विजयों के बाद इस्राएल की वाचा के नवीनीकरण में इस दृष्टिकोण पर फिर से बल दिया गया है। पद 8:31 में इस्राएल ने वैसे ही तैयारी की जैसे "यहोवा के दास मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी," और उन्होंने एक वेदी बनाई जैसे कि "मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है।" पद 8:32 में यहोशू ने पत्थरों पर मूसा की व्यवस्था की एक नक़ल लिखी। और पद 8:33 के अनुसार उन्होंने



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

लोगों को ऐसे व्यवस्थित किया जैसे कि "मूसा ने पहले से आज्ञा दी थी।" मूसा की व्यवस्था पर दिए गए ध्यान ने बड़ी स्पष्ट रीति से दर्शाया कि मूल पाठकों की विजय और पराजय मूसा की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता का परिणाम होगी।

> यहोशू की संपूर्ण पुस्तक में परमेश्वर की व्यवस्था, या मूसा की व्यवस्था का पालन करने के विषय में वास्तव में एक दृढ़ शिक्षा पाई जाती है। आरंभ से लेकर अंत तक यह सारी पुस्तक आज्ञाकारिता के विषय में एक बुलाहट है, और यह दर्शाती है कि आज्ञाकारिता का परिणाम क्या होता है। इसी लिए पद 1:8 में पाए जानेवाले इसके आधार से ही हम इस बात को देखते हैं : "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"
>
> — पास्टर ओर्नान क्रूज़

## परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, दो नगरों पर इस्राएल की विजयों ने परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य को भी प्रकट किया। यह विषय यरीहो नगर के पतन की ओर ले जानेवाले अध्यायों में बार-बार पाया जाता है। यहोशू के भेदियों और राहाब का वर्णन करनेवाले पहले खंड में, पद 2:9 में राहाब ने माना कि "[इस्राएल का] भय हम लोगों के मन में समाया है।" और पद 2:24 में भेदियों ने पुष्टि की कि "[उस देश के] सारे निवासी हमारे कारण घबरा रहे हैं।" व्यवस्थाविवरण 11:22-25 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल शत्रुओं के मनों में डर उत्पन्न करने के द्वारा उनके विरुद्ध अक्सर अलौकिक सामर्थ्य को प्रकट किया था।

यही नहीं, यरदन नदी को पार करते हुए परमेश्वर ने पद 3:7 में यहोशू से यह कहा, "मैं तेरे संग हूँ।" जैसे कि पहले उल्लेख किया गया है, इस अभिव्यक्ति ने दर्शाया कि परमेश्वर इस्राएल के लिए अलौकिक सामर्थ्य से लड़ रहा था। पद 3:10 में यहोशू ने फिर से यह कहते हुए इस्राएलियों के समक्ष परमेश्वर के वचनों की घोषणा की, "जीवित ईश्वर तुम्हारे मध्य में" — या साथ — "है।" और पद 5:1 में हम परमेश्वर को कार्य करते हुए देखते हैं जब कनानियों के मन घबरा गए थे।

यरीहो नगर के पतन का लगभग हर पहलू इस विषय को स्पष्ट करता है। यह विशेष रूप से पद 6:20 में स्पष्ट है जब परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य से "[यरीहो की] शहरपनाह नींव से गिर पड़ी।" और यह कोई हैरानी की बात नहीं कि हमारे लेखक ने पद 6:27 में यहोशू के भेदियों और राहाब के विवरण की समाप्ति यह कहते हुए की, "और यहोवा यहोशू के संग रहा।"

जैसे कि हम अपेक्षा कर सकते हैं, ऐ नगर में इस्राएल की हार के आरंभिक चरण में अलौकिक सामर्थ्य दिखाई नहीं दी। जबकि पद 7:5 में हम पढ़ते हैं कि "[इस्राएलियों]" का — न कि कनानियों का — "मन पिघलकर जल–सा बन गया।" और जब परमेश्वर ने पद 7:12 में इस्राएल से पश्चाताप का आह्वान किया तो परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि जब तक वे आकान के पाप को दूर नहीं करते, तब तक "मैं आगे को तुम्हारे संग नहीं रहूँगा।" परंतु जब इस्राएलियों ने आकान के पाप को दूर किया तो परमेश्वर ने ऐ नगर पर विजय दिलाने में एक बार फिर से अपनी अलौकिक सामर्थ्य को प्रकट किया। पद 8:18 में परमेश्वर ने यहोशू को आज्ञा दी, "अपने हाथ का बर्छा ऐ की ओर बढ़ा;" और युद्ध जीत लिया गया।

इन सारे अध्यायों में हमारे लेखक ने दोनों नगरों पर यहोशू की आरंभिक विजयों का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया कि उसके मूल पाठक मानवीय बल से अपने युद्धों को नहीं जीत सकते। विजय परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के कारण ही प्राप्त हुई।

### सारा इस्राएल

पाँचवाँ, दोनों नगरों पर इस्राएल की विजयों ने विजय अभियान में सारे इस्राएल की भागीदारी के महत्व पर बल दिया। इस्राएल द्वारा यरदन नदी को पार करने के खंड में पद 3:1, 17 हमें बताते हैं कि यहोशू के साथ *सब इस्राएली* पार उतर गए। पद 4:14 में, "यहोवा ने सब इस्राएलियों के सामने यहोशू की महिमा बढ़ाई।" और निस्संदेह पद 4:4 के "बारह पुरुषों" और पद 4:8, 9 तथा 20 के "बारह पत्थरों" ने इस्राएल के बारह गोत्रों को प्रस्तुत किया। यही नहीं, पद 5:8 के अनुसार इस्राएल की "सारी जाति" का गिलगाल में खतना हुआ। और यरीहो के पतन के समय परमेश्वर ने पद 6:3 में आज्ञा दी कि यहोशू "जितने योद्धा हैं" उन सबके साथ नगर के चारों ओर एक बार घूम आए।

एक बार फिर, हम ऐ नगर में इस्राएल की पराजय में महत्वपूर्ण भिन्नता को देखते हैं। पद 7:3 में भेदियों ने यहोशू से कहा, "सब लोग वहाँ न जाएँ।" इस्राएल के पश्चाताप कर लेने के बाद लेखक ने पद 7:23 में "सब इस्राएलियों" की भागीदारी का उल्लेख किया। और पद 7:24, 25 में "सब इस्राएलियों" ने आकान के विरुद्ध दंड में एक साथ भाग लिया।

अब तक जैसे कि हम अपेक्षा कर रहे होंगे, पद 8:33 में वाचा के नवीनीकरण में "सारे इस्राएली" परमेश्वर के सामने खड़े हुए। हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक के इस भाग में सारे इस्राएलियों की भागीदारी की ओर इसलिए ध्यान आकर्षित किया ताकि वह इसमें कोई संदेह न रहे कि इस्राएल के गोत्रों की प्रत्येक पीढ़ी को एक साथ युद्ध करने के लिए तैयार रहना होगा।

यह देख लेने के बाद कि कैसे इस्राएल की जयवंत विजय का विवरण विजय की तैयारी के साथ आरंभ होता है और दो नगरों पर इस्राएल की विजयों की ओर आगे बढ़ता है, अब हम दो गठजोड़ों पर इस्राएल की बाद की विजयों की ओर आते हैं।

## दो गठजोड़ों पर विजय

यहोशू की पुस्तक का लेखक प्रतिज्ञा के देश पर यहोशू की शेष विजयों की रूपरेखा की रचना कई अलग तरीकों से कर सकता था। परंतु उसने इसकी अपेक्षा इस बात पर ध्यान दिया कि कैसे यहोशू का विजय अभियान दो नगरों से दो क्षेत्रों की ओर बढ़ा, अर्थात् प्रतिज्ञा के देश के दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्र की ओर। जैसा कि हम देखेंगे, उसकी पुस्तक का यह भाग उसके मूल पाठकों की आवश्यकताओं के लिए अधिक प्रासंगिक था क्योंकि इसने दर्शाया कि यहोशू का विजय अभियान उस पूरी सीमा तक पहुँचा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी।

हमारी पुस्तक में इस बिंदु से पहले इस्राएल का विजय अभियान उन्हें यरदन पार से यरीहो नगर, ऐ नगर, और एबाल पर्वत तथा गरिज्जीम पर्वत तक ले गया था। परंतु इस भाग में हमारे लेखक ने इस विचार का परिचय दिया कि पूरे कनान में यहोशू के विरुद्ध गठजोड़ किए गए, पहले दक्षिण में, और फिर उत्तर में।

जब हम दो गठजोड़ों पर इस्राएल की विजयों का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम एक बार फिर से इस भाग की संरचना और विषय-वस्तु को और फिर इसके मूल अर्थ को संक्षिप्त रूप से देखेंगे। आइए हम संरचना और विषय-वस्तु के संक्षिप्त विवरण के साथ आरंभ करें।

## संरचना और विषय-वस्तु

अध्याय 9–12 में दो गठजोड़ों पर इस्राएल की विजय भ्रामक हो सकती हैं क्योंकि इन अध्यायों में विविध प्रकार की सामग्री पाई जाती है। परंतु यह तब सहायक होती है जब हम यह अनुभव कर लेते हैं कि यह खंड चार मुख्य भागों में विभाजित होता है।

### गठजोड़ों का संक्षिप्त विवरण

पद 9:1, 2 में पहला भाग उन गठजोड़ों का एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है जो इस्राएल के विरुद्ध खड़े हुए। यह संक्षिप्त रूप से बताता है कि अगले अध्यायों में क्या होगा। ये सभी पद हमें बताते हैं कि "जितने राजा यरदन के इस पार... रहते थे, वे एक मन होकर यहोशू और इस्राएलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए।"

### विजयों का संक्षिप्त विवरण

अध्याय 11:16–12:24 में गठजोड़ों के विवरण का चौथा और अंतिम भाग इस्राएल की विजयों का द्विरूपी विवरण देने के द्वारा इस आरंभिक परिचय के साथ संतुलित होता है। आरंभ में, पद 11:16, 23 यरदन के साथ-साथ के दक्षिण और उत्तरी भाग में विजयों के पूरे दायरे की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। यह विवरण बल देता है कि यहोशू ने उन सबका नाश किया जिनका नाश करने की आज्ञा उसे परमेश्वर ने दी थी। और यह इन वचनों के साथ पद 23 में समाप्त होता है : "और देश को लड़ाई से शान्ति मिली।" इसके बाद, पद 12:1-24 में, हमारे लेखक ने पुस्तक के इस भाग की समाप्ति यरदन के पार और यरदन के साथ-साथ के राजाओं और देशों की एक ऐसी सूची के द्वारा की जिन पर इस्राएल ने विजय पाने के द्वारा अधिकार कर लिया था।

### दक्षिणी गठजोड़ पर विजय

पुस्तक के इन सिरों के बीच हम दो मुख्य खंडों को पाते हैं। पहला खंड अध्याय 9:3–10:43 में है जहाँ हमारे लेखक ने एक दक्षिणी गठजोड़ पर इस्राएल की विजयों का वर्णन किया। ये अध्याय पद 9:3-27 में संदिग्ध गिबोनी वाचा के साथ आरंभ होते हैं। कनान के बिल्कुल केंद्र में रहनेवाले गिबोनियों ने यह दावा करने के द्वारा इस्राएल के साथ शांति की वाचा बाँधकर उनके साथ छल किया कि वे कनान देश के बाहर से आए हैं। इस वाचा ने प्रतिज्ञा के देश के दक्षिणी क्षेत्र में एक बड़े स्तर के संघर्ष को प्रेरित किया।

पद 10:1-15 में इस बड़े स्तर के संघर्ष ने इस्राएल की अगुवाई एक आरंभिक दक्षिणी विजय की ओर की। इन पदों में यरूशलेम के राजा ने पाँच दक्षिणी राजाओं के एक गठजोड़ की रचना की और गिबोनियों पर आक्रमण कर दिया, जिन्होंने फिर सहायता के लिए यहोशू से विनती की। अपनी वाचा के कारण इस्राएल गिबोनियों की सहायता करने को बाध्य था। और परमेश्वर ने इस आरंभिक दक्षिणी युद्ध में यहोशू को चमत्कारिक विजय प्रदान की। और फिर यहोशू 10:16-43 में लेखक ने यहोशू की व्यापक दक्षिणी विजयों, कई स्थानों के पूरे दक्षिणी गठजोड़ पर उसकी विजयों के एक संक्षिप्त विवरण को जोड़ा। जैसे कि हमारे लेखक ने पद 10:40 में ध्यान दिया, "यहोशू ने उस सारे देश को... मारा।"

### उत्तरी गठजोड़ पर विजय

पुस्तक के इस भाग में अगला मुख्य खंड पद 11:1-15 में है। यहाँ हमारा लेखक उत्तरी गठजोड़ पर इस्राएल की विजयों की ओर मुड़ा। यह खंड भी दक्षिण में यहोशू की विजयों के प्रारूप का अनुसरण करता है, परंतु इसका विवरण बहुत ही छोटा है। पद 1 से 11 में हासोर के राजा ने इस्राएल के विरुद्ध एक गठजोड़ किया। पद 11:4 में हम पढ़ते हैं कि इस गठजोड़ में उनकी सेना "समुद्र के किनारे की बालू के



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

किनकों के समान बहुत थी।" परंतु परमेश्वर ने इस उत्तरी गठजोड़ पर भी इस्राएल को विजय प्रदान की। अतः 11:12-15 में हम पूरे उत्तरी क्षेत्र में यहोशू की निर्णायक विजय के सारांश को पाते हैं।

इन दोनों गठजोड़ों पर इस्राएल की विजयों की संरचना और विषय-वस्तु को मन में रखते हुए हमें एक क्षण के लिए इन अध्यायों के मूल अर्थ पर ध्यान देना चाहिए।

## मूल अर्थ

जैसे कि हम देख चुके हैं, यरीहो और ऐ नगरों के विरुद्ध इस्राएल के युद्धों में मूल पाठकों को सिखाने के लिए बहुत कुछ था। पर हमारा लेखक यह जानता था कि बाद के समयों में रहनेवाले उसके पाठक इन उदाहरणों को आसानी से झुठला सकते हैं। ये एक-एक नगर थे जिनमें शत्रुओं की संख्या काफी कम थी, और जिन शत्रुओं का सामना उसके पाठकों ने किया था वे मजबूत गठजोड़ों और बड़ी-बड़ी सेनाओं के साथ थे। अतः इन परिस्थितियों में अपने मूल पाठकों को उत्साहित करने के लिए हमारे लेखक ने उन बड़े स्तर की विजयों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जिन्हें यहोशू ने अपने समय में प्राप्त किया था।

दो गठजोड़ों पर इस्राएल की विजयों के विवरण ने उन पाँच में से चार विषयों को दर्शाया जिन्हें हम पिछले अध्यायों में देख चुके हैं।

### ईश्वरीय अधिकार

पहला, हम देखते हैं कि ईश्वरीय अधिकार ने इन घटनाओं पर नियंत्रण रखा। उदाहरण के लिए, दक्षिण की आरंभिक विजय में हम पद 10:8 में पढ़ते हैं कि "यहोवा ने यहोशू से कहा... 'मैं ने उनको तेरे हाथ में कर दिया है।'" और एक अन्य उदाहरण के रूप में पद 11:9 हमें बताता है, उत्तर में उसकी विजयों के दौरान यहोशू ने इन कार्यों को "यहोवा की आज्ञा के अनुसार" किया। बार-बार, ये अध्याय इस्राएल पर यहोशू की ईश्वर से प्राप्त अधिकारपूर्ण अगुवाई पर बल देते हैं। यह इसलिए था कि मूल पाठक यह समझ लें कि कैसे गठजोड़ों पर यहोशू की महान विजयों ने उन्हें तब मार्गदर्शन प्रदान किया जब वे अपने समय में संघर्षों का सामना कर रहे थे।

### मूसा की व्यवस्था का स्तर

दूसरा, दो गठजोड़ों पर इस्राएल की विजयों ने मूसा की व्यवस्था के स्तर पर भी बल दिया। उदाहरण के लिए, पद 9:14 में गिबोनी वाचा की कहानी में हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों के साथ इसलिए छल हुआ क्योंकि उन्होंने "यहोवा से बिना सलाह लिये" यह कार्य किया। उन्होंने याजकों से मार्गदर्शन को प्राप्त न करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वासघात को दर्शाया, जैसे कि मूसा ने व्यवस्थाविवरण 17:9 जैसे अनुच्छेदों में बताया था। परंतु यहोशू 9:20 में यहोशू ने गिबोनियों से खाई "शपथ के अनुसार" मूसा की व्यवस्था का अनुसरण किया।

इसके अतिरिक्त, यहोशू की व्यापक दक्षिणी विजयों के सारांश में हम पद 10:40 में पढ़ते हैं कि यहोशू ने मूसा की आज्ञाओं का पालन किया और "परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार" किसी को जीवित न छोड़ा। इसी प्रकार, पद 11:12 में उत्तर क्षेत्र की अपनी विजयों में यहोशू ने "यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के अनुसार उनको तलवार से घात करके सत्यानाश किया।" पद 11:15 में, "जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उनमें से यहोशू ने कोई भी पूरी किए बिना न छोड़ी।" और पद 11:20 में कनान देश में यहोशू की विजयों के अंतिम विवरण में यहोशू ने "उस आज्ञा के अनुसार जो [यहोवा ने] मूसा को दी थी" किया।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इस विषय को विशेष रूप से दर्शाया गया है क्योंकि हर पीढ़ी में इस्राएलियों को यह याद दिलाए जाने की आवश्यकता थी कि वे तभी विजय प्राप्त कर सकेंगे जब वे मूसा की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे। यहोशू के समय के समान उनके समय में भी व्यवस्था का पालन करना ही विजय प्राप्त करने की कुंजी थी।

## परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

तीसरा, हम फिर से देखते हैं कि इन दोनों गठजोड़ों पर इस्राएल को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के फलस्वरूप विजय मिली। आरंभिक दक्षिणी विजय में पद 10:10 संकेत करता है कि स्वयं परमेश्वर ने ऐसा किया कि "[गठजोड़ के लोग] इस्राएलियों से घबरा गए।" पद 11 में, "यहोवा ने आकाश से बड़े बड़े पत्थर उन पर बरसाए।" और पद 13 में, "सूर्य उस समय तक थमा रहा" ताकि इस्राएल युद्ध जीत सके। इन अलौकिक हस्तक्षेपों ने पद 14 में लेखक को बड़े आश्चर्य के साथ यह टिप्पणी करने के लिए प्रेरित किया, "यहोवा तो इस्राएल की ओर से लड़ता था।" और जब दक्षिण क्षेत्र में इस्राएल का व्यापक विजय अभियान जारी रहा, तो पद 10:21 के अनुसार परमेश्वर की सामर्थ्य ने इतना भय उत्पन्न कर दिया कि "इस्राएलियों के विरुद्ध किसी ने जीभ तक न हिलाई।" यहोशू ने पद 10:25 में बड़े साहस के साथ घोषणा की, "यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से... ऐसा ही करेगा।" और लेखक ने पद 10:42 में यह कहते हुए इस सारांश को समाप्त किया, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएलियों की ओर से लड़ता था।"

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य का विषय उत्तरी क्षेत्र की विजयों में पाया जाता है। उदाहरण के लिए परमेश्वर ने पद 11:6 में यहोशू को आश्वस्त किया, "मैं उन सभों को इस्राएलियों के वश में करके मरवा डालूँगा।" फिर गठजोड़ों के विरुद्ध विजयों के अंतिम विवरण में हम पद 11:20 में पढ़ते हैं कि "यहोवा की जो मनसा थी, कि... उसने उनके मन ऐसे कठोर कर दिए" ताकि इस्राएल के शत्रु पराजित हो जाएँ।

हमारे लेखक के द्वारा इस विषय को दोहराने का उद्देश्य बार-बार इस बात की पुष्टि करना था कि उसके मूल पाठक संघर्षों में कभी अपनी सामर्थ्य पर निर्भर न रहें। अपने शत्रुओं पर विजय पाने की उनकी आशा यह थी कि परमेश्वर अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा उनकी ओर से हस्तक्षेप करे।

> यहोवा ने अपने अधिकार और अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा यहोशू और इस्राएल के लिए विजय को प्राप्त किया। यह अभिव्यक्ति कि यहोवा ने "देश उन्हें दिया है," या "देश उन्हें सौंप दिया है" इब्रानी में समान क्रिया है, और यहोशू की पुस्तक में कई बार दोहराई गई है। यहोवा ने शत्रुओं को यहोशू के हाथ सौंपा है। वही है जिसने वह देश इस्राएल को दिया है। इसे इस बात पर बल देने को दोहराया गया है कि यहोवा सर्वसामर्थी है, जो शत्रुओं को पराजित करता है... जब एमोरियों के राजा गिबोनियों के विरुद्ध एकत्रित हुए और गिबोनियों ने इन राजाओं का सामना करने के लिए यहोशू से सहायता माँगी, हम इसे यहोशू 10:11 में पढ़ते हैं :
>
> इस्राएल के सामने से भागते हुए जब वे बेथोरोन की उतराई पर आए, तो यहोवा ने उन पर स्वर्ग से अजेका तक बड़े-बड़े पत्थरों को गिराया, और वे मारे गए। जो ओलों से मारे गए उनकी गिनती इस्राएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थी (यहोशू 10:11)।
>
> जो बल यहाँ दिया गया है वह यहोवा के अधिकार पर है। उसने इस घटना के द्वारा अपने अधिकार को प्रकट किया — उसने शत्रुओं पर पत्थर, ओले बरसाए, और जो यहोवा के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से मारे गए उनकी गिनती इस्राएलियों की तलवार



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> से मारे हुओं से अधिक थी... इसलिए विजय यहाँ इन घटनाओं में यहोवा के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के कारण अलौकिक विजय थी। यह हमें हमारे सर्वसामर्थी परमेश्वर के विषय में एक अद्भुत बात बताता है जिसके पास सब बातों और सब परिस्थितियों पर संपूर्ण सामर्थ्य और अधिकार है।
>
> — रेव्ह. शेरिफ गेंडी, अनुवाद

### सारा इस्राएल

दो गठजोड़ों पर इस्राएल की विजयों के उसके पूरे विवरण में हमारे लेखक ने एक चौथे विषय पर भी बल दिया : सारे इस्राएल की भागीदारी। पद 10:7 में गिबोन के निकट आरंभिक दक्षिणी विजय में यहोशू "सारे योद्धाओं और सब शूरवीरों को संग लेकर" आगे बढ़ा। और पद 10:15 में हम देखते हैं कि यहोशू सारे इस्राएलियों" सहित युद्ध से वापस लौटा। व्यापक दक्षिणी विजयों के विवरण में पद 10:21 उल्लेख करता है कि "सब लोग" यहोशू के साथ थे। और पद 10:24 में यहोशू ने "इस्राएल के सब पुरुषों" को बुलाया। हम इस विषय के महत्व को 10:29-38 में भी देखते हैं। वहाँ हमारे लेखक ने पाँच बार यह दोहराया, "यहोशू [ने] सब इस्राएलियों" सहित यह या वह किया। और यह पूरा खंड पद 10:43 में "सब इस्राएलियों" के लौटने के साथ समाप्त होता है। अंततः इस्राएल की उत्तरी विजयों में हमारे लेखक ने पद 11:7 में दर्शाया कि "यहोशू सब योद्धाओं समेत" वहाँ था।

यहोशू की पुस्तक का लेखक यह जानता था कि इस्राएल के गोत्र अक्सर एक प्रजा के रूप में खड़े रहने में विफल रहे। इसलिए उसने उन आशीषों पर बल दिया जो यहोशू के समय में इस्राएल को तब मिलीं जब वे एक साथ खड़े थे। इसने उसकी पुस्तक के मूल पाठकों को उनके समय के शत्रुओं का सामना करते हुए एक साथ स्थिर खड़े रहने की बुलाहट दी।

यह देख लेने के बाद कि कैसे इस्राएल के जयवंत विजय अभियान में विजय के लिए उनकी तैयारियाँ, दो नगरों पर उनकी विजय और दो गठजोड़ों पर उनकी विजय शामिल हैं, इसलिए आइए इस अध्याय में हम अपनी अंतिम चर्चा की ओर मुड़ें : इस्राएल की विजय के विवरण का मसीही अनुप्रयोग।

## मसीही अनुप्रयोग

पूरे इतिहास में मसीह के गंभीर अनुयायी अक्सर गलत दिशा में चले जाते हैं जब वे यहोशू की पुस्तक के इस भाग का अध्ययन करते हैं। कुछ लोगों ने तो इसे पुराने नियम के विश्वास के एक ऐसे भाग के रूप में ठुकरा दिया है जिसका हमारे साथ कोई संबंध नहीं है। अन्य लोगों ने मसीह के कार्य के लिए हथियार उठाने को न्यायोचित ठहराने के लिए इसका प्रयोग किया है। परंतु जब हम उन बातों को देखते हैं जो नया नियम इस्राएल की विजय की यीशु की पूर्णता के विषय सिखाता है, तो हम यहोशू की पुस्तक के इस भाग के मसीही अनुप्रयोग के प्रति एक समुचित दिशा-निर्देश को प्राप्त करते हैं।

पिछले अध्याय में हमने जो सीखा है उस पर और अधिक निर्माण करने के द्वारा हम मसीही अनुप्रयोग के प्रति इस दिशा-निर्धारण को देखेंगे। मसीह ने अपने राज्य के उद्घाटन में इस्राएल की विजय को पूरा किया। वह इसे अपने राज्य की निरंतरता में पूरा कर रहा है। और वह अपने राज्य की पूर्णता में इसे समुचित रूप से पूरा करेगा। आइए पहले देखें कि मसीह के राज्य के उद्घाटन का क्या अर्थ है।

## उद्घाटन

संपूर्ण रूप में, यहोशू के समय में इस्राएल की विजय ने शैतान और उसके अनुयायियों के विरुद्ध चल रहे परमेश्वर के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण बढ़ोतरी को प्रस्तुत किया। परंतु यीशु के पहले आगमन में उसने और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के राज्य के उद्घाटन में और भी अधिक उपलब्धि हासिल की। सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक सिखाते हैं कि यीशु और उसके प्रेरितों ने शैतान और उसकी बुरी आत्माओं का सीधे-सीधे सामना किया और उन पर विजय प्राप्त की। जैसे कि यीशु ने तब कहा जब लूका 10:18 में उसके चेले दुष्टात्माओं को निकालने के बाद वापस लौटे, “मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।” और यही नहीं, कुलुस्सियों 2:15, इब्रानियों 2:14, 15 और इफिसियों 4:8 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण ने शैतान और उसकी बुरी आत्माओं को पराजित किया। अन्यजातियों के क्षेत्रों में शैतान के विरुद्ध युद्ध करने हेतु अपने प्रेरितों के लिए मार्ग खोलने के द्वारा यीशु यहोशू से भी आगे बढ़ा।

परंतु यहोशू के विपरीत, जब यीशु इस पृथ्वी पर आया तो यह उसके लिए परमेश्वर का समय नहीं था कि वह पापमय *मनुष्यजाति* के विरुद्ध हथियार उठाए। वास्तव में, यूहन्ना 18:11 में यीशु ने पतरस को उसकी भौतिक आक्रामकता के कारण डांटा। इसकी अपेक्षा, यीशु ने राज्य के अपने सुसमाचार या “शुभ संदेश” के दो पहलुओं का प्रचार करने के द्वारा शैतान और उसके अनुयायियों पर परमेश्वर की ओर से विजय प्राप्त की। उसने बड़ी मजबूती से परमेश्वर के आने वाले दंड की चेतावनी दी, और उसने उन सब के प्रति दया की घोषणा की जो परमेश्वर के प्रति समर्पण करने को तैयार थे। पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने वैसा ही किया जब उन्होंने मसीह की विश्वव्यापी विजय के इस आरंभिक चरण को आगे बढ़ाया। उन्होंने कभी लोगों पर शारीरिक आक्रमण की बात नहीं की। इसकी अपेक्षा, यीशु के समान उन्होंने दंड और उद्धार के सुसमाचार के संदेश का प्रचार किया।

अब नया नियम कलीसिया के बाहर के अविश्वासियों को परमेश्वर के आगामी दंड के विषय में बार-बार चेतावनी देता है। परंतु इसके साथ-साथ वह *कलीसिया के भीतर* के अविश्वासियों या “झूठे भाइयों” के विरुद्ध परमेश्वर के दंड की चेतावनी भी देता है। 1 कुरिन्थियों 16:22 और गलातियों 1:8 जैसे अनुच्छेद कलीसिया के झूठे भाइयों पर शापों — यूनानी में *अनातमा* (*ἀνάθεμα*) — के आने की चेतावनी देते हैं। ये शाप हमें इस्राएली आकान के विरुद्ध दंड की याद दिलाते हैं, जिसे मार डाला गया था। और इस संबंध को इस बात से दृढ़ किया जाता है कि यहोशू की पुस्तक के सेप्तुआजिंत अनुवाद — प्राचीन यूनानी अनुवाद — में *अनातमा* शब्द के रूप इब्रानी शब्द *खरम* (חָרַם) और *खेरेम* (*חֵרֶם*) के अनुवाद हैं जिनका अर्थ है “नाश कर देना।” परंतु जब प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने कलीसिया के भीतर और बाहर के लोगों को परमेश्वर के दंड की चेतावनियाँ दीं, तो उन्होंने लोगों को पश्चाताप के लिए भी बुलाया ताकि वे परमेश्वर के आने वाले क्रोध से बच सकें।

> यहोशू की पुस्तक में लोगों को शाप दिया गया। उन्हें अधीन किया गया, और परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में आदर न देने, परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानने, और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार आचरण न करने के कारण पूरी तरह से नाश कर दिया गया। और बाइबल के लेखकों के दृष्टिकोण से यह एक अच्छी, खरी और धर्मी बात है क्योंकि यह परमेश्वर के धर्मी चरित्र को दृढ़ करता है, यह परमेश्वर के लोगों के प्रति उसकी प्रतिज्ञा को दृढ़ करता है, और यह हमें दर्शाता है कि परमेश्वर वास्तव में विश्वासयोग्य है... और एक ओर, 1 कुरिन्थियों 16:22 और गलातियों 1:8 में पौलुस कहता है कि यदि तुम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, दूसरी ओर, यदि तुम इस सुसमाचार का प्रचार नहीं तो परमेश्वर का दंड तुम पर पड़ता है। और पौलुस यहाँ परमेश्वर के दंड की भलाई के साथ सहमत होता है जब

> वह कहता हैं “वे शापित हों।” और यह प्रभु यीशु के उस अंतिम आगमन को दर्शाता है जब वह अपने सब शत्रुओं को अपने अधीन कर लेगा, और वह परमेश्वर की धार्मिकता को प्रकट करेगा, और वह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के सत्य को दृढ़ करेगा। और जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे परमेश्वर के न्याय को बढ़ते और महिमा पाते हुए देखना चाहते हैं, और वे देखना चाहते हैं कि परमेश्वर अपने वचन की सत्यता को प्रकट करे।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

जब हम इन मूलभूत विचारों को मन में रखते हैं तो हमारे पास यह देखने के भरपूर अवसर होते हैं कि कैसे यहोशू की पुस्तक के इस विभाजन के पाँच विषय मसीह के राज्य के उद्घाटन में पूरे हुए। जैसे यहोशू की विजय की अगुवाई ईश्वरीय अधिकार के द्वारा हुई, वैसे ही यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की विजयों की अगुवाई भी ईश्वरीय अधिकार के द्वारा हुई। जैसे यहोशू के समय में इस्राएल की विजय परमेश्वर की वाचा पर स्थापित थी, वैसे ही यीशु और उसके प्रेरितों की विजय भी नई वाचा पर स्थापित थी। जैसे मूसा की व्यवस्था के स्तर की आज्ञाकारिता यहोशू की सफलताओं के लिए एक कुंजी थी, वैसे ही यीशु और उसके प्रेरितों की सफलताएँ भी मूसा, और मूसा के बाद परमेश्वर के संपूर्ण प्रकाशन पर निर्भर थीं। जैसे यहोशू और इस्राएल परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर निर्भर रहे, वैसे ही यीशु और उसके प्रेरितों की विजय भी परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर निर्भर थी। और जैसे यहोशू के विजय अभियान में सारा इस्राएल शामिल था, वैसे ही यीशु ने पूरे इस्राएल से लोगों को अपने साथ शामिल होने के लिए बुलाया। पिंतेकुस्त के दिन सारे जगत से आए यहूदी बुराई के विरुद्ध युद्ध में उसके साथ शामिल हुए। और यीशु के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने आरंभिक कलीसिया में अन्यजातियों को भी बड़ी संख्या में शामिल किया।

यह उल्लेख कर लेने के बाद कि कैसे इस्राएल की जयवंत विजय का मसीही अनुप्रयोग मसीह के राज्य के उद्घाटन में पूरा हुआ, अब हमें मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान मसीह में इसकी निरंतर पूर्णता की ओर मुड़ना चाहिए।

## निरंतरता

1 कुरिन्थियों 15:25 के अनुसार यीशु तब तक स्वर्ग में राज्य करेगा “जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए।” और पिछले दो हजार वर्षों में उसने पृथ्वी की लगभग हर जाति के प्रति अपनी कलीसिया की सेवा के द्वारा अपने विश्वव्यापी विजय अभियान को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया है। परंतु साथ ही जब-जब कलीसिया ने पश्चाताप, वाचाई नवीनीकरण और अनुग्रह के माध्यम की उपेक्षा की है, तब-तब उसने अनेक असफलताओं का भी अनुभव किया है। अतः नया नियम हमारा आह्वान करता है कि हम दिन-प्रतिदिन परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ्य में मसीह के कार्य को आगे बढ़ाएँ।

एक ओर, हमें शैतान और बुरी आत्माओं के विरुद्ध आत्मिक युद्ध में लगे रहना है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु और उसके भविष्यवक्ताओं ने किया था। इफिसियों 6:13-18 के अनुसार “परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो... सत्य से अपनी कमर... धार्मिकता की झिलम... मेल के सुसमाचार... विश्वास की ढाल... उद्धार का टोप... और आत्मा की तलवार... हर समय... आत्मा में प्रार्थना... करते रहो।” हमें आत्मिक युद्ध की तैयारी ठीक वैसे ही करनी चाहिए जैसे इस्राएल को कनान पर विजय पाने के लिए उचित रीति से करनी पड़ी थी।

दूसरी ओर, हमें मनुष्यों को वैसे ही शामिल करते रहना चाहिए जैसे यीशु और उसके प्रेरितों ने किया था। हम उनका विरोध करते हैं जो मसीह के मार्गों का विरोध करते हैं, परंतु भौतिक आक्रमणों के

साथ नहीं। इसकी अपेक्षा, हम मसीही सुसमाचार के न्याय और उसकी दया की घोषणा करते हैं। हम परमेश्वर के दंड की चेतावनी देते हैं जो अविश्वासी जगत पर आने वाला है। और हम कलीसिया में झूठे भाइयों को परमेश्वर के आगामी दंड के बारे में चेतावनी देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यहोशू ने इस्राएली आकान को चेतावनी दी थी जब उसने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया था। 2 कुरिन्थियों 10:5 में पौलुस ने अपनी सेवकाई का वर्णन "हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्‍वर की पहिचान के विरोध में उठती है" को नष्ट करने के रूप में किया। परंतु हम उन सब के लिए उद्धार की आशा की घोषणा भी करते हैं जो मन फिराते हैं तथा मसीह के प्रति समर्पण करते हैं।

मसीह के राज्य की निरंतरता के प्रति एक दिशा-निर्धारण हमारे लिए एक मार्ग को खोलता है कि हम यहोशू के विजय अभियान के विवरण को अपने दैनिक जीवनों पर लागू करें। जैसे कि इस्राएल की अगुवाई ईश्वरीय अधिकार के द्वारा हुई, वैसे ही आपको और मुझे भी ईश्वरीय अधिकार के द्वारा अगुवाई प्राप्त करनी है जब हम मसीह के राज्य को और आगे बढ़ाते हैं। जैसे विजय के लिए इस्राएल का आत्म-विश्वास परमेश्वर की वाचा पर निर्भर था, वैसे ही हम मसीह में नई वाचा के कारण और अधिक आत्म-विश्वास को प्राप्त कर सकते हैं। जैसे युद्ध में इस्राएल की सफलता मूसा की व्यवस्था के स्तर के प्रति समर्पण पर निर्भर थी, वैसे ही हमारे मसीही युद्ध में हमारी सफलता पुराने और नए नियम सहित *पूरे* पवित्रशास्त्र के स्तर के प्रति हमारे समर्पण पर निर्भर करती है। जैसे इस्राएल को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा विजय मिली, वैसे ही आज हमें भी विजय परमेश्वर के आत्मा की अलौकिक सामर्थ्य के कार्यों के द्वारा ही मिलती है। और जिस प्रकार यहोशू के समय में विजय प्राप्त करने के लिए पूरे इस्राएल को सहभागी होना जरूरी था, वैसे ही हमें भी हर कुल, भाषा और जाति की एक प्रजा के रूप में हमारे युद्धों को लड़ना जरूरी है।

इस्राएल की विजय के मसीही अनुप्रयोग में न केवल यह शामिल होता है कि मसीह ने अपने राज्य के उद्घाटन में क्या किया, और अब वह अपने राज्य की निरंतरता में क्या कर रहा है। बल्कि हम यहोशू के विवरण को भी लागू करते हैं क्योंकि यह उस दिन के बारे में भी हमारी आशाओं को दृढ़ करता है जब मसीह अपने राज्य की पूर्णता में वापस आएगा।

## पूर्णता

नया नियम बड़े स्पष्ट शब्दों में हमें बताता है कि जब यीशु का पुनरागमन होगा, तो वह एक जयवंत राजा के रूप में आएगा। प्रकाशितवाक्य 19:11 में यूहन्ना के दर्शन में उसने यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जो "न्याय और युद्ध करता है।" और उस दिन यीशु की अंतिम विजय मसीह की विश्वव्यापी विजय की परम आशा को पूरा करेगी। यीशु यहोशू के समय के विनाश के हर कार्य का स्थान ले लेगा। और वह उस प्रत्येक सकारात्मक लाभ का स्थान ले लेगा जो यहोशू अपने समय में इस्राएल के लोगों के लिए लेकर आया था।

एक ओर, जब मसीह का पुनरागमन होगा तो शैतान पूरी तरह से पराजित हो जाएगा। उसके पास फिर हमें धोखा देने और हमें हानि पहुँचाने का कोई अधिकार नहीं होगा। जैसे कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों 16:20 में लिखा, "शान्ति का परमेश्‍वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा।" और दूसरी ओर, विद्रोही मनुष्यों के प्रति परमेश्वर की दया समाप्त हो जाएगी। जैसा कि यीशु ने स्वयं प्रकाशितवाक्य 21:8 में कहा, "[उनका] भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है।" शैतान और उसकी सेवा करनेवाले पृथ्वी से मिटा दिए जाएँगे, परंतु जिन्होंने मसीह के प्रति अपना जीवन समर्पित किया है वे नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर अनंत उद्धार की महिमामय विजय का आनंद उठाएँगे।

> हम एक बड़े संघर्ष, तनाव, क्लेश और सताव के बीच रहते हैं, और इसलिए यह हमारे लिए एक स्वाभाविक प्रश्न है, यह कैसे बदलेगा? हम इस बात की पुष्टि

> करना चाहते हैं कि यीशु का पुनरागमन उसके पहले आगमन से अलग होगा, अर्थात् उसका पुनरागमन समाप्ति को लाएगा, न्याय के प्रश्नों की पूर्णता को लाएगा, और यह कि सब कुछ सही हो जाएगा। आंशिक रूप में, भले ही हम वह नहीं देखते फिर भी उस बात पर भरोसा करते हैं। हम इसलिए भरोसा करते हैं क्योंकि परमेश्वर, परमेश्वर है, कि वह "समय के अंत" में अर्थात् भ्रष्ट समय के रचित अनुभव के अंत में परमेश्वर सिद्ध न्याय को लेकर आएगा; परमेश्वर सिद्धता के साथ न्याय करेगा। वह कठोरता से न्याय नहीं करेगा। वह न्याय के स्तरों के अनुसार न्याय करेगा। अतः मृत्यु पूरी तरह से पराजित हो जाएगी। हमारी अपनी सारी मूर्तिपूजा पराजित हो जाएगी। सब कुछ सही हो जाएगा। और उस वास्तविकता के लिए मानवीय हृदय में इससे बड़ी लालसा नहीं होगी, और यह गलत नहीं है कि हम इसकी लालसा करते हैं क्योंकि यह वैसे ही होगा जैसे परमेश्वर ने इसे रचा है।
>
> — डॉ. रिचर्ड लिंट्स

जिस प्रकार ईश्वरीय अधिकार ने यहोशू के कार्यों को निर्देशित किया, उसी प्रकार परमेश्वर का अधिकार यीशु मसीह के पुनरागमन के महान और अद्‌भुत दिन को निर्देशित करेगा। जिस प्रकार यहोशू की विजय इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा पर स्थापित थी, उसी प्रकार नई वाचा में परमेश्वर की पवित्र प्रतिज्ञा के कारण मसीह की अंतिम विजय निश्चित है। जिस प्रकार इस्राएल की सफलता मूसा की व्यवस्था के स्तर के पालन पर निर्भर थी, उसी प्रकार यीशु की अंतिम विजय इसलिए सफल होगी क्योंकि उसमें कोई दोष नहीं है। जिस प्रकार यहोशू को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के द्वारा विजय मिली, उसी प्रकार यीशु का पुनरागमन परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य का ऐसा महानतम प्रकटीकरण होगा जैसा इस संसार ने कभी नहीं देखा होगा। और जिस प्रकार यहोशू की विजय ने सारे इस्राएल की भागीदारी के आदर्श को दृढ़ किया, उसी प्रकार जब मसीह का पुनरागमन होगा तो पृथ्वी की हर जाति और कुल से परमेश्वर के लोग उसकी महान विजय का उत्सव मनाने के लिए एक साथ होंगे।

## उपसंहार

इस अध्याय में हमने देखा है कि कैसे यहोशू की पुस्तक का पहला मुख्य विभाजन इस्राएल की जयवंत विजय पर ध्यान देता है। हमने देखा है कि कैसे यहोशू की पुस्तक के लेखक ने विजय के लिए इस्राएल की तैयारियों को प्रस्तुत किया, कैसे यरीहो और ऐ नामक दोनों नगरों पर उसने इस्राएल की विजयों के बीच विपरीतता को दर्शाया, और कैसे उसने प्रतिज्ञा के देश के दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों में शक्तिशाली गठजोड़ों पर इस्राएल की व्यापक विजयों को चित्रित किया। और हमने कुछ ऐसे तरीकों पर चर्चा की है जिनके द्वारा हम हमारी पुस्तक के इस पहले मुख्य विभाजन के मसीही अनुप्रयोगों को जाँच सकते हैं।

यहोशू की पुस्तक ने मूल पाठकों को उनके समय में युद्ध के संघर्षों का सामना करते समय यह याद दिलाने के द्वारा महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान किए जो प्रतिज्ञा के देश में इस्राएल की जयवंत विजय में हुआ था। और यह विवरण हमारा मार्गदर्शन भी करता है जब हम मसीह की उस भव्य परिपूर्णता में शामिल होते हैं जो इस्राएल ने यहोशू के समय में पूरा किया था। यह हमें उस बात पर भरोसा करने की बुलाहट देता है जो मसीह ने पहले ही पूरी कर दी है। यह हमें दिन-प्रतिदिन युद्ध में उसका अनुसरण करने



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

की बुलाहट देता है। और यह हमें आश्वस्त करता है कि हमारी वर्तमान चुनौतियों के बावजूद मसीह वापस आएगा और बुराई तथा पूरी सृष्टि में फैले इसके प्रभावों पर अपनी जयवंत विजय को पूरा करेगा।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.